संरचनावाद

सुनिता

व्याख्याता, मनोविज्ञान विभाग

गोपीनाथ सिंह महिला महाविद्यालय, गढ़वा (झारखण्ड)

संरचनावाद का स्वरूप

माकर्स एवं हिलिक्स (Marx and Hillix) के अनुसार संरचनावाद की तीन महत्वपूर्ण मान्यताएँ हैं। प्रथम, मनोविज्ञान का सम्बन्ध मुख्य रूप से वैज्ञानिक प्रेरण (Scientific impetus) से है। इस प्रकार संरचनावादियों ने मनोविज्ञान को मुख्यतया एक वैज्ञानिक प्रारूप प्रदान किया तथा इसे दर्शनशास्त्र एवं शरीर क्रिया विज्ञान (Physiology) से पूर्णतः अलग रखा। संरचनावाद की द्वितीय मुख्य विशेषता यह थी कि सम्पूर्ण मनोविज्ञान का अध्ययन अन्तर्दर्शन विधि के द्वारा ही किया गया। दूसरे शब्दों में अनर्तदर्शन विधि को ही मनोविज्ञान की विधि माना गया। तृतीय, इसके माध्यम से उन शक्तियों के विरुद्ध एक शक्तिशाली विरोध का आरम्भ हुआ, जिनके माध्यम से गेस्टाल्ट, प्रकार्यात्मक तथा व्यवहारवादी शक्तियाँ संगठित हुई थी। दूसरे शब्दों में संरचनावाद, मुख्य रूप से व्यवहारवाद, प्रकार्यवाद एवं समग्रतावाद का विरोधी था।

संरचनावादी, प्राणी के व्यवहार का अध्ययन उसकी संरचना के आधार पर करते हैं। इसको मुख्य मान्यता यह है कि चेतना विभिन्न मानसिक क्षमताओं का योग है। चेतना के स्वरूप में ही मानसिक तत्वों का समावेश है तथा इसकी व्याख्या मानसिक क्रियाओं के विश्लेषण से ही सम्भव है। दूसरे शब्दों में संरचनावादी मनोविज्ञान में मानसिक शक्तियों एवं साहचर्य का स्थान नहीं है। शक्ति मनोविज्ञान संवेदन, प्रत्यक्ष ज्ञान, ध्यान, कल्पना आदि को मन की शक्तियाँ मानता था। परन्तु संरचनावादी इस मत को अस्वीकार कर देते हैं क्योंकि उनके अनुसार ये वे मानसिक तत्व हैं जिनके योग से चेतना का निर्माण होता है। इसी प्रकार साहचर्यवादी साहचर्य के आधार पर समस्त मानसिक प्रक्रियाओं की व्याख्या करते हैं। किन्तु संरचनावादी, साहचर्यवादियों के इस मत को यह कह कर अस्वीकार कर देते हैं कि साहचर्य एवं मानसिक शक्तियों का तो वैज्ञानिक अध्ययन सम्भव ही नहीं है।

संरचनावादी मनोविज्ञान को अस्तित्ववादी (Existenstial) या अन्तर्दर्शनात्मक मनोविज्ञान (Introspective Psychology) भी कहा जाता है। वुडवर्ड ने टिचनर को अस्तित्ववादी मनोविज्ञान का जनक माना है तो हायडब्रेडर के मतानुसार टिचनर संरचनावादी है। संरचनावाद के विकास में मुख्य रूप से वुष्ट तथा टिचनर का योगदान रहा है।

एडवर्ड ब्रैडफोर्ड टिचनर

टिचनर जन्म से अंग्रेज था, व्यवसाय से जर्मन था तथा उसने अपने जीवन का सबसे सुनहरा काल संयुक्त राज्य अमेरिका में कार्नेल विश्वविद्यालय में व्यतीत किया। सन् 1890 में वह लीपजिंग गया जहाँ उसने वुण्ट के निर्देशन में शोध कार्य किया। सन् 1892 में उसे पी. एच. डी. की उपाधि प्राप्त हुई। टिचनर ने इन दो वर्षों की अवधि में वुण्ट से बहुत कुछ सीखा। 1892 में ही वह अमेरिका के कॉर्नेल विश्वविद्यालय में लेक्चरर के पद पर नियुक्त हो गया। यही उसने नये ढंग से मनोवैज्ञानिक प्रयोगशाला को संगठित किया। मूलरूप से टिचनर एक वैज्ञानिक था। यही कारण है

कि उसने मनोविज्ञान का निरूपण वैज्ञानिक पद्धति के आधार पर किया। टिचनर ने 216 लेख, नोट्स एवं अनेक किताबें लिखी। उसने 1896 में 'मनोविज्ञान की रूपरेखा' (An outline of Psychology), 1898 में 'मनोविज्ञान की प्रारम्भिकी' (A Primer of Psychology) तथा 1901–05 में 'प्रयोगात्मक मनोविज्ञान' को चार खण्डों में प्रकाशित करवाया। कुल्पे (Kulpe) ने टियनर के बाद के कार्यों को मनोविज्ञान के लिए बहुत महत्वपूर्ण बताया है।

टिचनर के संरचनात्मक मनोविज्ञान से सम्बन्धित मुख्य विचार

1898 में टिचनर का एक शोध पत्र अमेरिका में प्रकाशित हुआ, जिससे अमेरिका में संरचनावादी मनोविज्ञान को विशेष बल मिला।

मनोविज्ञान की विषय–सामग्री – टिचनर के मतानुसार मनोविज्ञान की विषय सामग्री अनुभव है। उसका मत था कि समस्त विज्ञान मानव के अनुभव के कुछ भागों का अलग–अलग ढंग से अध्ययन करते हैं लेकिन मनोविज्ञान की विषय सामग्री अन्य विज्ञानों की सामाग्री से भिन्न है क्योंकि यहाँ अनुभव से तात्पर्य अनुभव करने वाले व्यक्ति से है। जैसे प्रकाश एवं आवाज का अध्ययन भौतिकशास्त्री एवं मनोवैज्ञानिक दोनों ही करते हैं लेकिन एक भौतिकीविद् इन समस्याओं में निहित भौतिक प्रक्रियाओं का अध्ययन करता है जबकि एक मनोवैज्ञानिक का अध्ययन इस बात से सम्बन्धित है कि इसे व्यक्ति किस रूप में अनुभव करते हैं। सरल शब्दों में, अन्य विज्ञान अनुभूत वस्तुओं का स्वतन्त्र रूप से अध्ययन करते हैं जबकि मनोवैज्ञानिक, अनुभव को अनुभवी व्यक्ति के साथ रखकर अध्ययन करते हैं। जैसे भौतिक शास्त्र के क्षेत्र में तो इतना ही आता है कि इस कमरे का तापक्रम 85° पर है जबकि मनोविज्ञान के क्षेत्र का विषय यह है कि इस कमरे के तापक्रम 85° पर एक व्यक्ति को गर्मी या सर्दी का अनुभव होता है। अन्य शब्दों में मनोविज्ञान की सामग्री व्यक्ति के अनुभव से सम्बन्धित है।

मन और चेतना – टिचरन ने मन के सम्बन्ध में यह मत व्यक्त किया कि मन मानसिक दशाओं का अनुक्रम (Sequence) है। दूसरे शब्दों में, मन में व्यक्ति के जीवन भर के मानसिक अनुभवों का निवास है। हमें मन में निहित मानसिक दशाओं की चेतना होती है। जिस मानसिक दशा की चेतना नहीं होती, उसका कोई अस्तित्व नहीं है। टिवनर के अनुसार व्यक्ति मानसिक दशाओं का अनुभव स्वयं करता है। अतः इन दशाओं का स्वतन्त्र अस्तित्व होता है। संरचनावादी मन एवं चेतना का अध्ययन विश्लेषण के माध्यम से करते हैं। इनकी संरचना का ज्ञान भी विश्लेषण के ही द्वारा सम्भव है।

मनोविज्ञान की विधियाँ – टिचनर के मतानुसार अन्य विज्ञानों के समान ही मनोविज्ञान भी प्रेक्षण (Observation) पर आधारित है। लेकिन एक मनोवैज्ञानिक इस विधि का उपयोग केवल चेतन अनुभव (Conscious experience) के प्रेक्षण या अन्तर्दर्शन के लिए ही करता है। यहाँ यह बात उल्लेखनीय है कि टिचनर की अन्तर्दर्शन पद्धति वुण्ट की अर्न्तदर्शन पद्धति की ही विकसित रूप थी। इस पद्धति का उपयोग एक प्रशिक्षित प्रेक्षक ही कर सकता है।[2]

टिचनर ने अप्रशिक्षित प्रेक्षकों के स्थान पर स्नातक छात्रों को अन्तर्दर्शन पद्धति के उपयोग के लिए अधिक उपयुक्त बताया है। वुण्ट एवं टिचनर ने विज्ञान के दो मूल आधार माने हैं 2(1) नियन्त्रण (Control) (2) विश्लेषण (Analysis)। दोनों ने ही संरचनावादी मनोविज्ञान के लिए प्रयोगों का अत्यधिक महत्व प्रदान किया। ज्ञान प्राथमिक न

होकर आनुभाविक है तथा मन एवं शरीर, स्पष्टतः मनोवैज्ञानिक अध्ययन के लिए उचित प्रत्यय है। इनके अध्ययन के लिए अन्तर्दर्शन विधि पूर्णतः विश्वसनीय है। यहाँ एक बात को टिचनर ने उल्लेखनीय बताया है कि मनोविज्ञान में प्रेक्षण केवल अर्न्दर्शनात्मक प्रकृति का ही नहीं होना चाहिए बल्कि प्रयोगात्मक भी होना चाहिए। टिचनर के अनुसार प्रयोग एक प्रकार का प्रेक्षण है, जिसका पुनरावृत्ति, विश्लेषण एवं पृथक्करण किया जा सकता है।[3] इस प्रकार टिचनर ने मनोविज्ञान को ऐसा मनोविज्ञान माना है जिसकी विषय–सामग्री व्यक्ति के अनुभव हैं तथा उसका अध्ययन वैज्ञानिक आधार पर हो सकता है। टिचनर ने वैज्ञानिक पद्धति की वस्तुनिष्ठता के आधार पर ही यह बताया है कि मन मानसिक दशाओं का एक अनुक्रम है। तथा इन्हीं दशाओं के आधार पर हमें चेतना होती है। इसकी विधि प्रयोगात्मक है पर प्रयोग में प्रयोज्य के अन्तर्दर्शन पर विशेष बल दिया गया है।

मनोविज्ञान का उद्देश्य – मनोविज्ञान के उद्देश्य के सम्बन्ध में टिचनर ने वुण्ट के ही समान तीन उद्देश्यों या समस्याओं का वर्णन किया है–

1. चेतना–प्रक्रिया को उनके सरलतम रूप से घटाना, जो कि मुख्य आधारभूत संघटक (Components) हैं।

2. इन तत्वों के संयोजन का निर्धारण कैसे होता है यह बताना और इनके नियमों का वर्णन करना।

3. तत्वों को दैहिक दशाओं के साथ सम्बन्धित करना।[4]

मन और शरीर – टिचनर ने मन एवं शरीर के सम्बन्ध में कहा कि एक व्यक्ति के अनुभवों का आधार उसके शरीर की बनावट, मस्तिष्क तथा तन्त्रिकातन्त्र पर निर्भर है। ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से संवेदन होते हैं तथा संवेदनों के द्वारा व्यक्ति के मानसिक कार्य सम्पादित होते हैं। टिचनर ने मन एवं शरीर में कार्य–कारण सम्बंध को स्वीकार न करके एक ऐसे समानान्तर सम्बन्ध की कल्पना की है कि जिसके माध्यम से समस्त मानसिक कार्यों की व्याख्या सम्भव है। टिचनर में इस समानान्तर सम्बन्ध को और अधिक स्पष्ट करते हुए बताया कि यह सम्भव नहीं है कि शारीरिक परिवर्तनों से मानसिक क्रिया हो या मन ही शारीरिक परिवर्तन उत्पन्न करने का साधण्न हो। मन एवं शरीर तो एक ऐसी व्यवस्था उत्पन्न करने के परिचायक हैं जिनके द्वारा मानसिक क्रियाएँ उत्पन्न होती हैं। यहाँ यह कहना अधिक उचित है कि टिचनर ने विस्तृत रूप से मन तथा शरीर के समानान्तर सम्बन्ध पर प्रकाश नहीं डाला। उसने केवल अपने वैज्ञानिक दृष्टिकोण के कारण ही इस प्रकार के विचार व्यक्त किये हैं। ऐसा करने का मुख्य कारण यह हो सकता है कि वह मन एवं शरीर के सम्बन्ध में अधिक भौतिक या जनसामान्य के विचारों का समावेश नहीं होने देना चाहता हो। टिचनर ने कुछ सीमा तक अपने इस उद्देश्य की प्राप्ति में सफलता भी प्राप्त की है। फिर भी उसके मन एवं शरीर सम्बन्धी विचार पूर्णरूप से पर्याप्त नहीं हैं। उनमें केवल शुद्ध वैज्ञानिक रूप ही झलकता है।[5]

वैसे तो टिचनर के विचारों के आधार पर ही संरचनावाद की व्याख्या की जाती है परनतु फिर भी हम यहाँ स्वतंत्र रूप से संरचनावादी मनोवैज्ञानिक सम्प्रदाय के सम्बन्ध में विचार करेंगे। संरचनावाद का सबसे प्रमुख प्रत्यय यह है कि चेतना विभिन्न मानसिक तत्वों, संवेदन, प्रत्यक्षण, ध्यान, कल्पना, भावना आदि का समावेश है। संरचनावाद में अनुभवों का आधार तन्त्रिका तन्त्र को माना जाता है। यह अनुभवों का कारण नहीं है, बल्कि वह माध्यम है, जिससे

अनुभव को प्राप्त करने में सहायता मिलती है। मन एवं शरीर के सम्बन्ध में टिचनर ने मनः शारीरिक समानान्तरता (Psychophysical parallelism) का उल्लेख किया है। व्यक्ति के अनुभवों की इकाई, मानसिक तत्त्व, संवेदन, प्रतिमा, भावना आदि हैं। इन मानसिक ततवों में गुण, गहनता, अवधि तथा स्पष्टता की विशेषताएँ पायी जाती हैं। संरचनावादी मनोवैज्ञानिकों ने अपने अध्ययन में अन्र्दर्शनात्मक विश्लेषण पर विशेष ध्यान दिया जाता है। उनका विचार था कि विश्लेषण के माध्यम से ही मन एवं चेतना के स्वरूप का परिचय प्राप्त हो सकता है। संरचनावाद को पूर्णरूप से समझने के लिए यहाँ यह आवश्यक प्रतीत होता है कि हम अन्य वादों से इनके अन्तर को जानें।

संदर्भ सूची

1. Maru. Melvin H. G. Hillix William A.: Systems and Theories in Psychology. Mc Graw Hill Book Co, 1963, P 61
2. Marx, M. H. and Hillix, W A.: Systems and Theories in Psychology. Mc Graw Hill Book Co, 1963, P. 69-70.
3. Schultz, Daunce P: A History of Modern Psychology, 1969, P. 67.
4. Ibid, P.67
5. Boring, E. G: A History of Experimental Psychology, P. 405.